आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 3/ जून 2023
Received: 09/06/2023; Accepted: 14/06/2023; Published: 24/06/2023

महिलाओं के प्रति भारतीय समाज का आचरण: प्राचीन वैदिक काल से आधुनिक युग तक

सहिल चंद
स्नातक छात्र, द्वितीय वर्ष (बीए-राजनीति विज्ञान और इतिहास)
सुराना कॉलेज (ऑटानमस), बैंगलोर
ई-मेल आईडी : chand.sahil0410@gmail.com
फ़ोन नंबर:9886160361

सहिल चंद, **महिलाओं के प्रति भारतीय समाज का आचरण: प्राचीन वैदिक काल से आधुनिक युग तक**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 3/ जून 2023, (286-291)

संक्षेप

भारत में महिलाओं को प्राचीन काल से ही सम्मान प्राप्त रहा है। नारी परिवार की रीढ़ की हड्डी और हृदय की धड़कन है, उसे एक साथ बांधते हैं। कई बाधाओं का सामना करने के बावजूद, भारत में महिलाएं उम्मीदों से ऊपर उठ रही हैं और अपेक्षाओं को पार कर रही हैं। उन्हें शक्ति का अवतार माना जाता है और अक्सर उन्हें घर की लक्ष्मी कहा जाता है। हमारी संस्कृति में नारी को भगवान के रूप में देखा जाता है और उसका उसी तरह सम्मान किया जाना चाहिए जैसे हम परमात्मा का सम्मान करते हैं। हालाँकि, हम अपनी संस्कृति को भूल जाते हैं, और जीवन के विभिन्न चरणों में एक नारी पर प्रतिबंध लगाए जाते हैं। क्या यह केवल वर्तमान समय में ही समस्या रही है? इस प्रश्न का उत्तर है'नहीं'। प्राचीन काल से, सामाजिक मानदंडों का उपयोग करके उसके सपनों और इच्छाओं को सीमित करने और हेरफेर करने का प्रयास किया गया है। यह अध्ययन विश्लेषण करता है कि प्राचीन काल से लेकर आज तक भारत में महिलाओं के साथ कैसा व्यवहार किया जाता रहा है।

प्रस्तावना

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, महिलाएं सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर वैदिक काल और यहां तक कि आज तक भी सम्मान की प्रतीक रही हैं। हमारे पास अतीत की कई प्रसिद्ध हस्तियां हैं जिन्होंने चुनौतियों को पार किया और अपना नाम इतिहास में सुनहरे अक्षरों में अंकित किया है। हमारे पास प्राचीन काल से महान महिला शासक, कवयित्री और विद्वान थे। हालाँकि, यह दावा करना गलत होगा कि प्राचीन काल में सभी महिलाओं को

स्वतंत्रता प्राप्त थी। जैसे-जैसे समाज विकसित होने लगे, महिलाओं पर प्रतिबंध लगाए जाने लगे। आज भी, केवल कुछ ही महिलाओं को सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त है, जबकि बहुसंख्यक, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में और विशेष रूप से उत्तरी भारत में, अभी भी परदा प्रणाली के तहत रहती हैं।

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति: पुरुषों के श्रेष्ठ होने की अवधारणा का परिप्रेक्ष्य:

भगवान ने सभी को समान बनाया है, "पुरुषों के श्रेष्ठ होने" की अवधारणा उभरी, शायद केवल शारीरिक शक्ति के कारण। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि महिलाओं के पास पुरुषों की तुलना में कहीं अधिक मानसिक शक्ति होती है। कभी-कभी, मुझे आश्चर्य होता है कि क्या हमने महिलाओं पर प्रतिबंध लगाना शुरू कर दिया क्योंकि हम उन्हें मंदिरों की देवी मानते थे। ये प्रतिबंध और वर्जनाएं क्यों उभरीं, इसका सवाल अनुत्तरित है।

भारतीय समाज सदियों से पितृसत्तात्मक रहा है, लेकिन हम प्राचीन भारत में मातृसत्तात्मक समाजों के तत्व भी पाते हैं, और आज भी कुछ जनजातियाँ हैं जो मातृसत्तात्मक प्रकृति को अपनाती हैं। हालांकि, अगर हम वैश्विक परिदृश्य को ध्यान से देखें, तो हम पाते हैं कि हर देश इस समस्या का सामना करता है। इसलिए, भारत को एक विकसित राष्ट्र बनने के लिए केवल जीडीपी या बुनियादी ढांचा पर्याप्त नहीं होगा। स्वामी विवेकानंद ने स्वयं स्वीकार किया था कि स्त्री और पुरुष एक ही पक्षी के पंखों के समान हैं।

वैदिक काल:

वैदिक काल में महिलाओं को नैतिकता के रखवाले के रूप में माना जाता था और उच्च आदर्शों को धारण करती थी। समाज पितृसत्तात्मक था, और बेटी का जन्म वांछनीय नहीं था। लोगों ने पुत्र प्राप्ति के लिए देवताओं से प्रार्थना की। यदि कोई लड़की पैदा होती थी तो उसके साथ दया और प्रेम का व्यवहार किया जाता था। लड़कियों को भी शिक्षा प्रदान की जाती थी, हालाँकि यह 'द्विज प्रणाली' के समान नहीं थी। बृहद्धर्म पुराण के एक दृश्य में, महर्षि जाबालि महर्षि व्यास से पूछते हैं, "तीनों लोकों में कौन से घटक सर्वोच्च हैं?" महर्षि व्यास का जवाब है कि गंगा से बेहतर कोई तीर्थस्थल नहीं है, भगवान विष्णु से बड़ा कोई दुनिया का पालनकर्ता नहीं है, भगवान शिव जैसा कोई नहीं है, और अपनी माँ से बड़ा कोई गुरु नहीं है। मानव धर्म-सूत्र में यह भी कहा गया है कि मातृत्व एक शिक्षक (उपाध्याय) की तुलना में दस लाख गुना अधिक महत्वपूर्ण है, एक शिक्षक (आचार्य) की तुलना में एक लाख गुना अधिक महत्वपूर्ण है, और एक पिता की तुलना में एक हजार गुना अधिक महत्वपूर्ण है।

प्रारंभिक वैदिक काल में, आर्यों का मानना था कि जहां महिलाओं का सम्मान किया जाता है, वहां भगवान का वास होता है। इस विश्वास के कारण महिलाओं को काफी स्वतंत्रता प्राप्त थी। कोई बाल विवाह या सती प्रथा

नहीं थी। हालाँकि सती प्रथा का कुछ उल्लेख मिलता है, लेकिन यह संख्या में बहुत कम थी। महिलाओं को अपना पति चुनने की अनुमति थी और विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहित किया गया। महिलाओं का समाज में बहुत सम्मान था, और धार्मिक समारोहों के दौरान पत्नियाँ अपने पति के साथ जाती थीं। महिलाओं ने राजनीतिक और सामाजिक प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जैसा कि सभा और समिति में उनकी सक्रिय भागीदारी से स्पष्ट होता है।

हालाँकि, बाद के वैदिक काल में ये चीजें पूरी तरह से बदल गईं क्योंकि महिलाओं की स्वतंत्रता कम हो गई थी। महिलाओं की गिरती स्थिति में धार्मिक तत्वों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। महिलाओं को पुरुषों का गौरव माना जाता था और उनके गौरव की रक्षा के लिए प्रतिबंध लगाए गए थे। इन प्रतिबंधों के बावजूद, गार्गी, लोपामुद्रा, गोशा और सुलभा मैत्रेय जैसे व्यक्ति थे जो सामाजिक कठोरता के खिलाफ खड़े थे।

वैदिक काल के बाद, कठोर जाति व्यवस्था की शुरूआत ने महिलाओं की स्थिति में गिरावट को और मजबूत किया। वे अपने अलगाव के कारण राजनीतिक या प्रशासनिक उत्तरदायित्वों से अनभिज्ञ हो गए। उन्हें बोलने या यहां तक कि बाहरी लोगों से आंख मिलाने पर भी रोक लगा दी गई थी। कठोर जाति व्यवस्था के कारण बाल विवाह की शुरुआत हुई। लोगों को डर था कि अगर किसी लड़की को किसी नीची जाति के आदमी से प्यार हो जाए तो यह अपशकुन होगा। इसलिए कम उम्र में ही लड़कियों की शादी कर दी जाती थी। वैदिक काल के बाद महिलाओं के लिए एक कठिन जीवन की शुरुआत हुई।

मध्यकालीन भारत

भारत में मध्ययुगीन काल के दौरान, महिलाओं को महिमामंडित किया जाता था, फिर भी उन्हें उनके घरों तक सीमित कर दिया जाता था, उनसे आदर्श माता और पत्नी होने की उम्मीद की जाती थी। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत पहचान खो दी और उन्हें केवल उनके घर के पुरुष सदस्यों के माध्यम से पहचाना गया। बाल विवाह और सती प्रथा जैसी प्रथाओं के साथ-साथ जौहर और शिक्षा से वंचित करने जैसे अन्य रीति-रिवाज सामने आए।परदा प्रथा महिलाओं के सार्वजनिक अवलोकन को और कम करने और उन्हें सार्वजनिक क्षेत्र से पूरी तरह से अलग करने के लिए उभरी।

जौहर के संदर्भ में, जो हिंदू और मुस्लिम शासकों के बीच तीव्र संघर्षों के दौरान प्रचलित था, महिलाएं अक्सर अपने पति, पिता या भाइयों के आदेश पर अपनी पवित्रता की रक्षा के लिए आत्मदाह करती थीं। लगातार लड़ाइयों और जौहर की बढ़ती घटना के बावजूद, महिलाओं को आत्मरक्षा में प्रशिक्षित करने के लिए बहुत कम प्रयास हुए। इसके बजाय, उन्होंने जौहर का सहारा लिया।

यह समझने में परेशानी हो रही है कि हम कहां गलत हो गए। हमारे वैदिक ग्रंथ, धार्मिक ग्रंथ, और रामायण और महाभारत जैसे महान महाकाव्य महिलाओं को शक्ति के अवतार, शक्ति के परम स्रोत के रूप में वर्णित करते हैं। हालाँकि, हमने उनके अधिकारों को कम कर दिया और उनके विचारों को दबा दिया, उन्हें ऐसे पुरुषों पर निर्भर बना दिया जो गुणों या विशेषताओं के मामले में उनसे कमतर भी हो सकते हैं।

इस प्रकार, प्रश्न उठता है: क्या हम वास्तव में अपनी संस्कृति (संस्कृति) का पालन कर रहे हैं? क्योंकि हमारी संस्कृति हमें वास्तव में जो अभ्यास करती है उससे कुछ अलग बताती है। हमारे धार्मिक ग्रंथों के कुछ श्लोक एक दूसरे के विपरीत भी हैं। उदाहरण के लिए, जबकि कुछ ग्रंथ महिलाओं की शक्ति (नारी शक्ति, दुर्गा का रूप) पर प्रकाश डालते हैं, अन्य इस बात पर जोर देते हैं कि एक पुरुष का प्राथमिक कर्तव्य महिलाओं की रक्षा करना है, और एक महिला का प्राथमिक कर्तव्य अपने पति (स्वामी) की सेवा करना है। हमारे धार्मिक ग्रंथों के अंतर्विरोध इस मुद्दे की जटिलता को और बढ़ा देते हैं।

हमारी संस्कृति और प्रचलित रीति-रिवाजों के बीच यह गहरा अंतर सांस्कृतिक मूल्यों के हमारे पालन के बारे में महत्वपूर्ण प्रश्न उठाता है। अगर हमारी संस्कृति महिलाओं के सशक्तिकरण को बढ़ावा देती है और उनकी अंतर्निहित ताकत को पहचानती है, तो हमने उनके अधिकारों को प्रतिबंधित क्यों किया और उन्हें अधीनता के अधीन क्यों रखा?

नया भारत लेकिन वही पुरानी समस्याएं:

स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद से भारत ने महत्वपूर्ण प्रगति की है, प्रत्येक बीतते वर्ष के साथ नई ऊंचाइयों पर पहुंचा है। महिलाओं कीस्थिति में भी सुधार देखा गया है, क्योंकि सभी के बीच समानता की लड़ाई जारी है। महिलाओं को अब प्रोत्साहित किया जाता है और विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त की जाती है, जबकि उनके प्रति सामाजिक दृष्टिकोण बदल गया है, जिससे महिलाओं के लिए अधिक सम्मान हो रहा है।

हालाँकि, वास्तविकता के प्रति जागना और यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि सब कुछ उतना सकारात्मक नहीं है जितना हम मानते हैं। हालांकि उल्लेखनीय सुधार हुए हैं, लेकिन समग्र रूप से भारत पर विचार करते समय यह सच नहीं हो सकता है। जैसा कि इस शोध पत्र की शुरुआत में बताया गया है कि उत्तर भारत में महिलाओं की स्थिति स्थिर बनी हुई है।

महिलाओं के खिलाफ हिंसा जैसे कि- घरेलू हिंसा, बलात्कार, एसिड अटैक, धमकाने और ब्लैकमेल सहित कई रूपों में होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में, महिलाएं और लड़कियां अभी भी शिक्षा से वंचित हैं, कई प्राथमिक शिक्षा

पूरी करने से पहले ही स्कूल छोड़ देती हैं। उत्तर प्रदेश, राजस्थान और बिहार जैसे राज्यों में निरक्षर महिलाओं का प्रतिशत सबसे अधिक है। इसके अलावा, कुल आबादी का लगभग 1/4 एक पुरुष बच्चे की इच्छा रखता है और पिछले पापों के परिणामस्वरूप एक लड़की पैदा करने का कारण मानता है। उत्तर भारत में, पर्दा प्रथा अभी भी प्रचलित है, जो महिलाओं की सामाजिक बातचीत और आंदोलनों को प्रतिबंधित करती है। जबकि कुछ तर्क देते हैं कि यह हमारी संस्कृति का हिस्सा है, हमें यह सवाल करना चाहिए कि हमारी संस्कृति किस चरम स्तर पर परदा प्रथा की मांग करती है।

महिला सुरक्षा हमारे समाज में एक और दबाव वाला मुद्दा है। हिंदुस्तान टाइम्स द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण से पता चला है कि दिल्ली में 87% लोगों को रात 9 बजे तक चिंता होने लगती है अगर घर की कोई महिला सदस्य अकेली है। उसी समय के दौरान अन्य शहरों का प्रतिशत बेंगलुरु में 54%, चेन्नई में 48% और मुंबई में 30% है।

सरकार विभिन्न योजनाओं के माध्यम से महिलाओं की सुरक्षा में सुधार और शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रयास कर रही है। हालाँकि, इन क्षेत्रों में सफलता या वृद्धि की दर न्यूनतम रही है। मेरा मानना है कि इस सीमित सफलता का एक कारण "हम" हैं। यदि हमारे पास कुछ विशेषाधिकार हैं, तो हम अक्सर इस बात को नज़रअंदाज़ कर देते हैं कि दूसरों के पास उन विशेषाधिकारों तक पहुँच है या नहीं। यह विवादास्पद लग सकता है, लेकिन इस "हम" में वे महिलाएं भी शामिल हैं जिनके पास शिक्षा या अन्य विशेषाधिकार हैं। वे भी अक्सर भारत में अन्य महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों को पहचानने में विफल रहती हैं। भारत में, विशेष रूप से उत्तर भारत में महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली लगातार चुनौतियों को स्वीकार करना आवश्यक है। महिलाओं के खिलाफ हिंसा, शिक्षा की कमी, सांस्कृतिक प्रतिबंध और सुरक्षा संबंधी चिंताएं महिलाओं के पूर्ण सशक्तिकरण और समानता में बाधक बनी हुई हैं। इन मुद्दों को संबोधित करने के लिए सामूहिक प्रयास और सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव की आवश्यकता है, जिसमें वे भी शामिल हैं जो पहले से ही कुछ विशेषाधिकारों से लाभान्वित हो चुके हैं।

निष्कर्ष:

जिस तरह हम जीवन को बनाए रखने के लिए धरती माता का सम्मान करते हैं, उसी तरह हमें हर उस महिला का भी सम्मान करना चाहिए, जिसमें जीवन को बनाए रखने की क्षमता है। हर महिला में नए जीवन को जन्म देने की शक्ति होती है। आज की दुनिया में पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समान अधिकार और स्वतंत्रता की मांग बढ़ रही है। इस शोध पत्र में बिना किसी अलंकृत जानकारी को शामिल किए हमारे समाज में लगातार चल रहे मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है।

समानता की यह लड़ाई अकेली उसकी नहीं है; यह हमारी लड़ाई भी है। वह हमेशा हमारे साथ खड़ी रही हैं और अब समय आ गया है कि हम उनके साथ खड़े हों।

संदर्भसूची:

Status of Women in Vedic Period: Dr. (Mrs.) Manisha Dwivedi

https://www.redalyc.org/journal/7039/703973410005/html/#:~:text=Due%20to%20the%20addition%20of,marriage%20system%20came%20into%20existence

Understanding the Status of Women in Medieval India: Radhika Kapur

https://www.hindustantimes.com/india-news/87-people-in-delhi-start-worrying-if-women-are-not-home-by-9pm-here-s-why/story-mX6kha1mg3OkIh1r9M5iAN.html

****